शुभकुलोत्तमशर्मविधायिनी जिनपतेः पदभक्तिरसौ सदा।
भवतु दुर्गतिदुःखविनाशिनी शिवपदं मम देव यतो मुदा॥२२॥

इति कथाकोशे आत्मनिंदाप्राप्तफलदृष्टान्ताख्यानं समाप्तम्।

८५. आत्मनिन्दाख्यानम्

सर्वदोषप्रहर्त्तारं कर्त्तारं शर्मणः सताम्। नत्वा जिनं प्रवक्ष्येहं स्त्रीकथां गर्हणाश्रिताम्॥१॥
अयोध्यानगरे राजा दुर्योधन इतीरितः। श्रीदेवीकामिनीनाथः संजातो न्यायमण्डितः॥२॥
बभूव ब्राह्मणस्तत्र सर्वोपाध्यायनामभाक्। ब्राह्मणी तस्य वीराख्या यौवनोन्मत्तमानसा॥३॥
सार्द्धं छात्रेण संसक्ता पापिनी साग्निभूतिना। हत्वा पतिं निजं वृद्धं सर्वोपाध्यायकं तदा॥४॥
छत्रिकायां समारोप्य कृष्णरात्रौ श्मशाने तं। निक्षेप्तुं च गता तत्र कोपाद्व्यन्तरदेवता॥५॥
छत्रिकां कीलयामास मस्तके संजगाद च। प्रभाते पुरनारीणा-मग्रतस्तु गृहे गृहे॥६॥

आदि को भी जिन भगवान् के सामने भक्तिपूर्वक आत्मनिन्दा-पूर्वक कर्मों की आलोचना करना उचित है। उत्तम कुल और उत्तम सुखों की देन वाली तथा दुर्गति के दुःखों की नाश करने वाली जिन भगवान् की भक्ति मुझे भी मोक्ष का सुख दें॥२१-२२॥

८५. आत्मनिन्दा की कथा

सब दोषों के नाश करने वाले और सुख के देने वाले ऐसे जिन भगवान् को नमस्कार कर अपने बुरे कर्मों की निन्दा-आलोचना करने वाली बीरा ब्राह्मणी की कथा लिखी जाती है॥१॥

दुर्योधन जब अयोध्या का राजा था तब की यह कथा है। यह राजा बड़ा न्यायी और बुद्धिमान् हुआ है। इसकी रानी का नाम श्रीदेवी था। श्रीदेवी बड़ी सुन्दरी और सच्ची पतिव्रता थी। यहाँ एक सर्वोपाध्याय नाम का ब्राह्मण रहता था। उसकी स्त्री का नाम वीरा था। उसका चाल-चलन अच्छा न था। जवानी के जोर में वह मस्त रहा करती थी। उपाध्याय के घर पर एक विद्यार्थी पढ़ा करता था। उसका नाम अग्निभूति था। वीरा ब्राह्मणी के साथ इसकी अनुचित प्रीति थी। ब्राह्मणी इसे बहुत चाहती थी। पर उपाध्याय इन दोनों के सुख का काँटा था। इसलिए ये मनमाना ऐशोआराम न कर पाते थे। ब्राह्मणी को यह बहुत खटका करता था। सो एक दिन मौका पाकर ब्राह्मणी ने अपने पति को मार डाला और उसे श्मशान में फेंक आने को छत्री में छुपाकर अन्धेरी रात में वह घर से निकली। श्मशान में जैसे ही उपाध्याय के मुर्दे को फेंकने को तैयार हुई कि एक व्यन्तरदेवी ने उसके ऐसे नीच कर्म पर गुस्सा होकर छत्री को कील दिया और कहा-"सबेरा होने पर जब तू सारे शहर की स्त्रियों के घर-घर पर जाकर अपना यह नीच कर्म प्रकट करेगी, अपने कर्म पर पछतायेगी तब तेरे सिर पर से यह छत्री गिरेगी।" देवी के कहे अनुसार ब्राह्मणी ने वैसा ही किया। तब कहीं उसका पीछा छूटा, छत्री सिर से अलग हो सकी। इस आत्म-निन्दा से ब्राह्मणी का पापकर्म बहुत हल्का हो गया, वह

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

दुराचारंस्त्वया स्वस्य कथ्यते गर्हणोत्करैः। तदा ते पतति व्यक्तं मस्तकाच्छत्रिका द्रुतम् ॥७॥
तया तथा कृते शीघ्रं छत्रिका पतिता क्षितौ। सा लोके च विशुद्धाभूद्-ब्राह्मणी निजगर्हणात् ॥८॥
तथान्यैस्तु बुधैः कार्यं गर्हणं स्वस्य शुद्धये। गुरूणामग्रतो भक्त्या दोषके पापभीरुभिः ॥९॥
शल्येनैव यथा प्रपीडिततनुर्निष्काश्य शल्यं भटः संप्राप्नोति सुखं तथा च सुधियः श्रीजैनसूत्रान्वितान्।
श्रित्वा श्रीमुनिनायकाच्छुभतरान्भूत्वा च शल्योज्झिताः स्वात्मोत्पन्नकुदोषगर्हणभरैर्नित्यं भजन्तु श्रियम् ॥१०॥

इति कथाकोशे आत्मगर्हणाख्यानं समाप्तम्।

८६. सोमशर्ममुनेराख्यानम्

सम्प्रणम्य जिनाधीशं सारधर्मोपदेशकम्।
सोमशर्ममुनेर्वच्मि शर्मदं सुकथानकम् ॥१॥
आलोचनैर्गर्हणनिन्दनैश्च व्रतोपवासैः स्तुतिसत्कथाभिः।
एभिस्तु योगैः क्षपणं करोमि विषप्रतीघातमिवाप्रमत्तः ॥२॥
अथात्र भरते क्षेत्रे पुण्ड्राख्यविषये शुभे। देवीकोट्टपुरे जातो ब्राह्मणः सोमशर्मवाक् ॥३॥
वेदवेदाङ्गपारज्ञः सोमिल्याब्राह्मणीपतिः। संजातौ चाग्निभूत्याख्यवायुभूती तयोः सुतौ ॥४॥

शुद्ध हुई। इसी तरह अन्य भव्यजनों को भी उचित है कि वे प्रतिदिन होने वाले बुरे कर्मों की गुरुओं के पास आलोचना किया करें। उससे उनका पाप नष्ट होगा और अपने आत्मा को वे शुद्ध बना सकेंगे। किसी पुरुष के शरीर में काँटा लग गया और वह उससे बहुत कष्ट पा रहा है। पर जब तक वह काँटा उसके शरीर से नहीं निकलेगा तब तक वह सुखी नहीं हो सकता। इसलिए उस काँटे को निकाल फेंककर जैसे वह पुरुष सुखी होता है, उसी तरह जो आत्म-हितैषी जैनधर्म के बताये सिद्धान्त पर चलने वाले वीतरागी साधुओं की शरण ले अपने आत्मा को कष्ट पहुँचाने वाले पापकर्म रूपी काँटे की कृत कर्मों की आलोचना द्वारा निकाल फेंकते हैं वे फिर कभी नाश न होने वाली आत्मीक लक्ष्मी को प्राप्त करते हैं ॥२-१०॥

८६. सोमशर्म मुनि की कथा

सर्वोत्तम धर्म का उपदेश करने वाले जिनेन्द्र भगवान् को नमस्कार कर सोमशर्म मुनि की कथा लिखी जाती है ॥१॥

आलोचना, गर्हा, आत्मनिन्दा, व्रत उपवास, स्तुति और कथाएँ तथा इनके द्वारा प्रमाद को, असावधानी को नाश करना चाहिए। जैसे मंत्र, औषधि आदि से विष का वेग नाश किया जाता है। इसी सम्बन्ध की यह कथा है ॥२॥

भारत के किसी हिस्से में बसे हुए पुण्ड्रक देश के प्रधान शहर देवी-कोटपुर में सोमशर्म नाम का ब्राह्मण हो चुका है। सोमशर्म वेद और वेदांग, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष, शिक्षा और कला का अच्छा विद्वान् था। इसकी स्त्री का नाम सोमिल्या था। इसके अग्निभूति और वायुभूति दो लड़के थे ॥३-४॥

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY